मरणान्मुक्ति का रहस्य

काशी पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं, पर काशी के श्मशानघाट से आरंभ होने वाली यह पुस्तक अद्भुत है। इसका कथा नायक अनोखा है और घटनाएं उससे भी अधिक, बल्कि कहें कि आश्चर्याभिभूत कर देने वाली। द्वैत-अद्वैत, तंत्र अथवा पराशक्ति पर लिखी जाने वाली पुस्तकें या तो शुद्ध ज्ञान देने वाली होती हैं या मात्र कल्पना को आधार बनाती हैं, पर इस पुस्तक के लेखक ने मध्यमार्ग का अनुसरण किया है, जहां अलौकिक जगत की भावभूमि में कथा नायक विचरण करता है। एक नवजात शिशु संतानहीन दंपति को वरदान की तरह श्मशान में प्राप्त होता है। कहानी काशी के घाटों के वातावरण को साथ लेकर आगे बढ़ती है। उस बच्चे का पालन करने वाली मां का नाम यशोदा है। बच्चे के ऊपर एक नाग का बार-बार छत्रछाया करना मानो उसके अनोखे भविष्य का संकेत दे देता है। रोचक यह है कि जहां भी उपन्यास में इस नाग की उपस्थिति होती है, वहां सर्वत्र चंदन की सुगंध फैली रहती है। यह एक अपूर्व रहस्यलोक की सृष्टि है, जिसमें सामान्य पाठक शायद ही प्रवेश कर सकेगा। कबीर की छाया पूरे उपन्यास को आवेष्टित किए हुए है। कथा नायक जिसका नाम महा है, काशी के श्मशान घाटों के बीच पलता बढ़ता है। कुछ समय बाद उसका पिता आत्महत्या कर लेता है । मां महा को श्मशान में चिताओं का अग्नि संस्कार करते देख आतंकित रहती है। पुस्तक में काशी के स्थानों की क्रमवार व्याख्या है। यह उपन्यास हमें हर घाट, हर मंदिर, गली तक मानो अंगुली पकड़कर ले जाता है। पात्र कम हैं, पर उन्हें आवश्यकतानुसार ही निबद्ध किया गया है। इस्माइल चाचा (या बिस्मिल्लाह खान) भूतू चाचा सहयोगी पात्र हैं। पात्र भले ही कम हैं, परंतु कथा की पृष्ठभूमि एक विशाल फलक पर चित्रित की गई है। आदि से अंत तक यह उपन्यास एक रहस्यमयी अनुभूति में पाठक को बांधे रहता है। लेखक कहीं अपने मुख्य पात्र में कबीर की छवि देखता है और कहीं उसे शिव का अंश मान लेता है। हैरत है कि इतनी परिष्कृत हिंदी और इतना कठिन गूढ़ विषय होते हुए भी उपन्यास की लयात्मकता कहीं नहीं टूटती।

कहानी एक रहस्यात्मक त्रिकोण सा बनाती है। काशीविश्वनाथ, महाश्मशान और महा। महा के स्वप्नों और भावजगत में आने वाले कबीर, उसके नित्य सहचर इस्माइल चाचा तथा भूतू चाचा अन्य बिंदु हैं, जो उपन्यास को आगे ले जाने में सहायक होते हैं। कबीर या तुलसी का महा के स्वप्न में आना कोई अनोखी बात नहीं...अलौकिक विभूतियों के साक्षात्कार होते ही हैं। कभी स्वप्न में, कभी तंद्रावस्था में और कभी साक्षात्।

महा, गुरु ज्ञान की खोज में काशी त्याग प्रयाग पहुंचता है। यहां कुंभ मेले में आने वाले नागा साधुओं का जिक्र है और उच्चतम अवस्था को प्राप्त अघोरी संतों का भी। महा की यात्रा धुर उत्तर से लेकर दक्षिण तक की है, इसी पदयात्रा के मध्य उसका सहयात्री बुद्धेश मिलता है। सभी ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करते चारों धाम संपूर्ण कर व दोनों अयोध्या पहुंचते हैं। वहां बुद्धेश को छोड़कर महा काशी चला जाता है। काशी में ही महा का निधन होता है। इस्माइल चाचा और भूतू चाचा अब भी हैं। अंतिम संस्कार से पहले बुद्धेश वहां पहुंचता है और तैलंग स्वामी (महा के आध्यात्मिक गुरु) के निर्देशानुसार ही अंतिम संस्कार करवाता है। यहां बनती है महा की समाधि। उस चांडाल महायोगी की समाधि... जो अंतत: अपना प्राप्तव्य पा लेता है। उपन्यास में कुछ नाटकीय मोड़ हैं, जैसे काशी में कबीर के साथ तुलसी का पदार्पण या फिर अकस्मात शिरडी के साईं से साक्षात्कार। पाठक की जिज्ञासा पर ब्रेक वहां लगता है, जहां हर अध्याय के अंत में ध्येय वाक्य लिखा होता है। 'याद रख मैं तेरा गुरु नहीं।' कहीं न कहीं यह उपन्यास की गंभीरता को हल्का करता है।

भाषा अत्यंत शुद्ध और परिष्कृत है।

अलौकिक शक्तियों के रहस्याभास, परा अनुभूतियों और उनसे उत्पन्न संवेगों पर इतने अधिकार से लिखना आसान नहीं है। इसके लिए इन विषयों के गहरे अध्ययन के साथ ही ऐसी अनुभूतियों का स्वयं साक्षात्कार भी होना चाहिए। पुस्तक पर काफी परिश्रम किया गया है। अंदर बने स्केच सुंदर हैं, पर बेहतर मार्केटिंग के लिए भाषा का सरल होना और सर्वग्राह्य होना पहली शर्त है। इससे यह अन्य राज्यों में भी लोकप्रिय हो जाती। सृजन अच्छा है तो उसे जन-जन के हाथों में पहुंचना चाहिए, सिर्फ लाइब्रेरी में नहीं।

– *सुनीता तिवारी*

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : काशी मरणान्मुक्ति
लेखक : मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड़
मूल्य : 501 रुपए
प्रकाशन : शिव ओम् साईं प्रकाशन 95/3 वल्लभनगर, इंदौर

मरणान्मुक्ति का रहस्य

काशी पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं, पर काशी के श्मशानघाट से आरंभ होने वाली यह पुस्तक अद्‌भुत है। इसका कथा नायक अनोखा है और घटनाएं उससे भी अधिक, बल्कि कहें कि आश्चर्याभिभूत कर देने वाली। द्वैत-अद्वैत, तंत्र अथवा पराशक्ति पर लिखी जाने वाली पुस्तकें या तो शुद्ध ज्ञान देने वाली होती हैं या मात्र कल्पना को आधार बनाती हैं, पर इस पुस्तक के लेखक ने मध्यमार्ग का अनुसरण किया है, जहां अलौकिक जगत की भावभूमि में कथा नायक विचरण करता है। एक नवजात शिशु संतानहीन दंपति को वरदान की तरह श्मशान में प्राप्त होता है। कहानी काशी के घाटों के वातावरण को साथ लेकर आगे बढ़ती है। उस बच्चे का पालन करने वाली मां का नाम यशोदा है। बच्चे के ऊपर एक नाग का बार-बार छत्रछाया करना मानो उसके अनोखे भविष्य का संकेत दे देता है। रोचक यह है कि जहां भी उपन्यास में इस नाग की उपस्थिति होती है, वहां सर्वत्र चंदन की सुगंध फैली रहती है। यह एक अपूर्व रहस्यलोक की सृष्टि है, जिसमें सामान्य पाठक शायद ही प्रवेश कर सकेगा। कबीर की छाया पूरे उपन्यास को आवेष्टित किए हुए है। कथा नायक जिसका नाम महा है, काशी के श्मशान घाटों के बीच पलता बढ़ता है। कुछ समय बाद उसका पिता आत्महत्या कर लेता है। मां महा को श्मशान में चिताओं का अग्नि संस्कार करते देख आतंकित रहती है। पुस्तक में काशी के स्थानों की क्रमवार व्याख्या है। यह उपन्यास हमें हर घाट, हर मंदिर, गली तक मानो अंगुली पकड़कर ले जाता है। पात्र कम हैं, पर उन्हें आवश्यकतानुसार ही निबद्ध किया गया है। इस्माइल चाचा (या बिस्मिल्लाह खान) भूतू चाचा सहयोगी पात्र हैं। पात्र भले ही कम हैं, परंतु कथा की पृष्ठभूमि एक विशाल फलक पर चित्रित की गई है। आदि से अंत तक यह उपन्यास एक रहस्यमयी अनुभूति में पाठक को बांधे रहता है। लेखक कहीं अपने मुख्य पात्र में कबीर की छवि देखता है और कहीं उसे शिव का अंश मान लेता है। हैरत है कि इतनी परिष्कृत हिंदी और इतना कठिन गूढ़ विषय होते हुए भी उपन्यास की लयात्मकता कहीं नहीं टूटती।

कहानी एक रहस्यात्मक त्रिकोण सा बनाती है। काशीविश्वनाथ, महाश्मशान और महा। महा के स्वप्नों और भावजगत में आने वाले कबीर, उसके नित्य सहचर इस्माइल चाचा तथा भूतू चाचा अन्य बिंदु हैं, जो उपन्यास को आगे ले जाने में सहायक होते हैं। कबीर या तुलसी का महा के स्वप्न में आना कोई अनोखी बात नहीं...अलौकिक विभूतियों के साक्षात्कार होते ही हैं। कभी स्वप्न में, कभी तंद्रावस्था में और कभी साक्षात्।

महा, गुरु ज्ञान की खोज में काशी त्याग प्रयाग पहुंचता है। यहां कुंभ मेले में आने वाले नागा साधुओं का जिक्र है और उच्चतम अवस्था को प्राप्त अघोरी संतों का भी। महा की यात्रा धुर उत्तर से लेकर दक्षिण तक की है, इसी पदयात्रा के मध्य उसका सहयात्री बुढ़ेश मिलता है। सभी ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करते चारों धाम संपूर्ण कर व दोनों अयोध्या पहुंचते हैं। वहां बुढ़ेश को छोड़कर महा काशी चला जाता है। काशी में ही महा का निधन होता है। इस्माइल चाचा और भूतू चाचा अब भी हैं। अंतिम संस्कार से पहले बुढ़ेश वहां पहुंचता है और तैलंग स्वामी (महा के आध्यात्मिक गुरु) के निर्देशानुसार ही अंतिम संस्कार करवाता है। यहां बनती है महा की समाधि। उस चांडाल महायोगी की समाधि... जो अंततः अपना प्राप्तव्य पा लेता है। उपन्यास में कुछ नाटकीय मोड़ हैं, जैसे काशी में कबीर के साथ तुलसी का पदार्पण या फिर अकस्मात शिरडी के साईं से साक्षात्कार। पाठक की जिज्ञासा पर ब्रेक वहां लगता है, जहां हर अध्याय के अंत में ध्येय वाक्य लिखा होता है। 'याद रख मैं तेरा गुरु नहीं।' कहीं न कहीं यह उपन्यास की गंभीरता को हल्का करता है।

भाषा अत्यंत शुद्ध और परिष्कृत है।

अलौकिक शक्तियों के रहस्याभास, परा अनुभूतियों और उनसे उत्पन्न संवेगों पर इतने अधिकार से लिखना आसान नहीं है। इसके लिए इन विषयों के गहरे अध्ययन के साथ ही ऐसी अनुभूतियों का स्वयं साक्षात्कार भी होना चाहिए। पुस्तक पर काफी परिश्रम किया गया है। अंदर बने स्केच सुंदर हैं, पर बेहतर मार्केटिंग के लिए भाषा का सरल होना और सर्वग्राह्य होना पहली शर्त है। इससे यह अन्य राज्यों में भी लोकप्रिय हो जाती। सृजन अच्छा है तो उसे जन-जन के हाथों में पहुंचना चाहिए, सिर्फ लाइब्रेरी में नहीं।

– *सुनीता तिवारी*

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : काशी मरणान्मुक्ति
लेखक : मनोज ठक्कर,
रश्मि छाजेड़
मूल्य : 501 रुपए
प्रकाशन : शिव ओम् साई
प्रकाशन 95/3
वल्लभनगर, इंदौर